॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

# ॥ आत्मषट्स्तोत्रम् ॥

# विषय सूची

॥ आत्मषट्स्तोत्रम् ॥ ........................................................................ 3

**भवदीय :**

**श्री मनीष त्यागी**

**संस्थापक एवं अध्यक्ष**
**श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन**

**www.shdvef.com**

**॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥**

॥ श्री हरि ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

# ॥ आत्मषट्स्तोत्रम् ॥

श्रीमद भगवत पूज्यपाद आद्य शङ्कराचार्य प्रणीतम्

भुजङ्गप्रयातं छंदः

मनोबुद्ध्यहंकारचित्तानि नाई,
न च श्रोत्रजिह्वे न च घ्राणनेत्रे ।
न च व्योमभूमी न तेजो न वायु,
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ १ ॥

मैं  मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार नहीं हूँ; श्रोत्र, जिह्वा, नासिका और नेत्र नहीं हैं; आकाश, पृथ्वी, तेज, और वायु भी नहीं हूँ किन्तु मैं चिदानन्दरूप  शिवहूँ, शिवहूँ ॥१॥

अहं प्राणवर्गो न पंचानिला मे,
न तोयं न मे धातवः पंचकोशाः ।
न वाक्पाणिपादौ न चोपस्थपायू,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ २ ॥

मैं (शुद्धात्मा) जल और प्राणोंका समूह नहीं हैं। मेरे पाँचवायु, सप्त धातु, पाँचकोश, वाणी, हाथ, पाँव, शिश्न और गुदा नहीं हैं। किन्तु मैं चिदानन्दस्वरूप शिवहूँ, शिवहूँ ॥ २ ॥

न मे द्वेषरागौ न मे लोभमोहौ,
मदो नैव मे नैव मात्सर्यभावः ।
न धर्मो न चार्थो न कामो न मोक्ष,
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ३॥

मुझ (शुद्धात्मा) को राग द्वेष, लोभ मोह, तथा मद हीं हूँ;

तेज, और मात्सर्यका मान नहीं है। मेरे लिये धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष आदि भी नहीं है। मैं तो केवल चिदानन्दरूप शिवहूँ, शिवहूँ ॥ ३ ॥

न पुण्यं न पापं न सौख्यं न दुःख,
न मंत्रो न तीर्थं न वेदा न यज्ञाः ।
अहं भोजनं नैव भोज्यं न भोक्ता,
चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ४ ॥

पुण्य पाप, सुख दुःख, मंत्र, तीर्थ, वेद और यज्ञ आदि सब मेरे लिये नहीं हैं। मैं न भोजन हूँ, न भोज्य हूँ और न भोक्ता हूँ किन्तु चिदानन्दरूप शिवहूँ, शिवहूँ ॥ ४ ॥

न मे मृत्युशंका न मे जातिभेदः,
पिता नैव मे नैव माता न जन्म ।
न बन्धुर्न मित्रं गुरुनैव शिष्य,
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ५॥

मुझे मृत्युका भय नहीं है, न मेरा जातिभेद है, न पिताहै। न माताहै, न जन्महै, न मरणहै, न बन्धुहै, न मित्र है, और न गुरुहै, न शिष्यहै, अतः मैं चिदानन्दरूप शिवहूँ, शिवहूँ ॥ ५ ॥

अहं निर्विकल्पो निराकाररूपो,
विभुप्य सर्वत्र सर्वेन्द्रियाणि ।
सदा मे समत्वं न मुक्तिर्न बन्ध,
श्चिदानन्दरूपः शिवोऽहं शिवोऽहम् ॥ ५॥

मैं (शुद्धात्मा ) निर्विकल्प और निराकार विभुस्वरूप हूँ। तथा सर्वत्र सब इन्द्रियोंमें व्यापृत हूँ। मुझमें सदा समताभाव रहताहै। बंध और मोक्ष मेरे लिये नहीं है अतः मैं चिदानन्दस्वरूप शिवहूँ, शिवहूँ ॥ ६

॥इति संक्षिप्तभाषाटीकासहितं श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं
आत्मषद्स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥